शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

1857 ई0 की क्रांति में गुजरों व रांघड़ों का योगदान: जनपद सहारनपुर के विशेष सन्दर्भ में

जयदीप कुमार (शोधार्थी)
चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय
मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

सहारनपुर जनपद उत्तर प्रदेश राज्य का उत्तर पश्चिमी जिला है। इसकी आकृति एक त्रिभुज की भांति है जिसका शीर्ष उत्तर पश्चिम की ओर है। यह जनपद उत्तर तथा उत्तर पूर्व में शिवालिक की उपत्यकाओं से और पूर्व में गंगा नदी से घिरा है। इसके पश्चिम तथा उत्तर पश्चिम में यमुना नदी इसकी सीमा का निर्माण करती है तथा इसको हरियाणा राज्य के करनाल और यमुनानगर जिलों से पृथक करती है। इसके दक्षिण में जनपद मुजफ्फरनगर स्थित है।1

सहारनपुर जनपद ने प्राचीन भारत के इतिहास और जनजीवन में उल्लेखनीय भूमिका तो निभाई ही है मध्यकाल और अंग्रेजी शासन काल में भी गौरवपूर्ण स्थान बनाये रखा है। आज भी यह जनपद देश के महत्वपूर्ण जनपदों में से एक है। इस क्षेत्र का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। पुरातत्व सर्वेक्षण के फलस्वरूप यहां पर विभिन्न संस्कृतियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। जो इसे सिन्धु घाटी की सभ्यता से जोड़ते हैं।

प्रस्तावना

सहारनपुर जनपद का पौराणिक नाम सुध्न था। जिसकी राजधानी वृहदहट्ट नामक व्यापारिक नगर रहा है। यह नगर आज भी जनपद सहारनपुर बादशाही बाग राजपथ पर स्थित बेहट के नाम से अपनी पहचान रखता है।2 लोक परम्पराओं के अनुसार मुहम्मद तुगलक ने शाह हारून चिश्ती के नाम पर सहारनपुर बसाया। परन्तु इसकी पुष्टि तुगलक के समकालीन इतिहासकारों द्वारा नहीं होती।3 अकबर के समय में सहारनपुर नगर राजा शाहरनबीन सिंह ने बसाया था। अकबर ने इसे सहारनपुर सरकार का मुख्यालय बनाया। तभी से यह सहारनपुर के नाम से विख्यात हो गया।4

दिल्ली सूबे के अन्तर्गत सहारनपुर सरकार में छत्तीस महाल (परगना) थे। इनमें से उन्नीस महालों का वर्तमान जिला सहारनपुर बनाया गया। जिसे चार तहसीलों- सहारनपुर, देवबन्द, रामपुर मनिहारन और नकुड़ में विभाजित किया गया।5

प्रथम स्वाधीनता संग्राम और सहारनपुर

1857 की महान क्रान्ति भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष की एक महान व ऐतिहासिक घटना है जिसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की जड़े हिला दी थी। 10 मई 1857 को मेरठ छावनी में भारतीय सैनिकों ने अंग्रेजो के विरूद्ध हथियार उठाकर इस स्वतन्त्रता आन्दोलन का श्रीगणेश किया जो शीघ्र ही देश के समस्त क्षेत्र में फैल गया।6 10 मई को मेरठ में क्रान्ति के प्रस्फुटित होने का समाचार मिलते ही जनपद की जनता ने गुर्जरों के नेतृत्व में क्रान्तिकारी कार्यवाहियां प्रारम्भ कर दी थी।7 जनपद में हर गांव में

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

विद्रोह की खबर आग की तरह फैल गई तथा कुछ ही समय के अन्दर पूरे जिले में अंग्रेजों के विरूद्ध क्रान्तिकारी कार्यवाहियां शुरू हो गई। सहारनपुर में क्रान्ति के विस्तार की त्वरित गति इस तथ्य को इंगित करती है कि जनपद में सुनियोजित क्रान्ति का प्रचार पहले से था तथा जनता ऐसे मौके की तलाश में थी।8

जनपद में हर गांव में विद्रोह का भडकना एवं ब्रिटिश सरकार विरोधी प्रतिशोधात्मक आक्रमण इस विश्वास को स्थापित करता है कि अपनी मातृभूमि को अंग्रेजो की दासता से मुक्ति दिलाने हेतू तथा अपने समाज एवं राष्ट्रीय संस्कृति की रक्षा हेतु जनपद के गांव, गली मुहल्लों के लोग किसी उचित अवसर की प्रतीक्षा में बैठे थे।9 यही कारण था कि मेरठ से क्रान्ति का समाचार मिलते ही पूरे जनपद की जनता गूर्जरों के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरूद्ध सडकों पर आ गई थी जिन्हें नियन्त्रित करने में अंग्रेजों को बडी कठिनाईयों का सामना करना पडा। ग्रामीण क्षेत्रों की जनता के सक्रिय सहयोग से इस विचार को बल मिलता है कि यह एक जन क्रान्ति थी।

यह तो सर्वविदित है कि 1857 के स्वातन्त्र्य आन्दोलन का आरम्भ भारतीय सैनिकों द्वारा किये गये विद्रोह से आरम्भ हुआ था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सेना का मुख्य आधार देशी सिपाहियों से निर्मित फौज एक महत्वपूर्ण कारक थी। अंग्रेजो ने इस फौज की सहायता से भारत को जीता था और अब पुनः इसकी सहायता से ही वे इस नयी अवस्था में देश को नियन्त्रण में रख पा रहे थे। फिर भी भारतीय सिपाहियों की स्थिति गुलामों की सी थी। न उनके रहन-सहन का स्तर ऊँचा था, न ही उनकी स्थिति एक सैनिक के समान थी। पग-पग पर अंग्रेज अफसर उनको अपमानित करते रहते थे।10

मई 1857 के प्रारम्भ से ही ऐसा अनुभव किया जाने लगा था कि देशी सिपाहियों और पलटनों का व्यवहार कुछ बदलने लगा है। अंग्रेजों की अवहेलना और उनसे सम्बन्धित तनाव उनके व्यवहार में परिलक्षित होने लगा था। उनकी आंखों में विद्रोह के भाव दिखने लगे थे।11

10 मई को मेरठ छावनी के हिन्दुस्तानी सिपाहियों ने अंग्रेजो सरकार के विरूद्ध हथियार उठा लिये। मेरठ में क्रान्ति के प्रस्फुटित होने का समाचार सहारनपुर में 12 मई को पहुंचा।12 इस खबर से अंग्रेज इतने भयभीत हुए कि सहारनपुर के मजिस्ट्रेट राबर्ट स्पैनकी ने अंग्रेज स्त्रियों और बच्चों को पहाड़ी स्टेशन मसूरी भेजने का निर्देश दे डाला।13

जनपद के हिन्दू गूर्जरों, मुसलमान गूर्जरों, राजपूतों व रांघड़ों ने अंग्रेजों और अंग्रेजों के इशारे पर जनता को सताने वाले जमींदारों, साहूकारों तथा सरकारी अधिकारियों पर आक्रमण करने का निर्णय लिया। आक्रमण का एक ऐसा सिलसिला प्रारम्भ हुआ कि समस्त सरकारी तन्त्र उससे आतंकित हो उठा।14 एक के बाद दूसरा गांव विद्रोह करता चला गया। क्रान्ति के विस्तार की गति यह सिद्ध करती है कि जनपद में सुनियोजित क्रान्ति का प्रचार पहले से था। जनपद की जनता का हृदय अंग्रेजों के प्रति नफरत से परिपूर्ण था, जो अंग्रेजी शासन को समूल उखाड़ फेंकने को आतुर थी।15

विद्रोह के आरम्भ में ही देखा गया कि गूजरों के गांवों का साहस इस सीमा तक बढ़ गया था कि उनको नियन्त्रित करना अंग्रेजों के लिए कठिन हो गया था। वास्तव में गूजर 1857 की क्रान्ति के अग्रदूत बन गये थे।16 इन्होंने मालगुजारी देना ही बन्द नहीं किया था, अपितु सरकारी खजानों पर आक्रमण करना तथा उन्हें लूटना भी

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

प्रारम्भ कर दिया था। जनपद के एक बड़े भू-भाग पर से इन्होंने कुछ समय के लिए फिरंगियों के अधिकार को समाप्त कर दिया था।17

इन्होंने अंग्रेज सरकार तथा उनके नुमांइदो, महाजन व साहूकारों को चुनौती दी थी। यह इस जनपद के लिए ही नहीं अपितु समस्त देश के लिए गर्व की बात है।18 गूजरों व रांघड़ों की यह कार्यवाही 23 मई तक इतने प्रचण्ड रूप से चलती रही कि अंग्रेज दहशत में आ गये और लगभग दो सप्ताह तक कोई प्रभावशाली कदम नहीं उठा सके।19

27 मई को राबर्टसन ने मेजर विलियम्स को साथ लेकर गूजरों के गांवों को सबक सिखाने का निश्चय किया तथा एक छोटी टुकडी के साथ देवबन्द की ओर बढ़ा। सबसे पहले उसने बाबूपुर, फतेहपुर तथा सांपला बक्काल गांव का दमन करने की योजना बनाई। ये तीनों वे गांव थे जिन्होंने एक रिसालदार तथा उसके तीस आदमियों के ऊपर हमला करके घायल कर दिया था।

राबर्टसन, मेजर विलियम्स और कैप्टन वाइल्ड ने उन्तीसवीं देशी पल्टन चैथी लारेन्स तथा कुछ अन्य सहायकों के साथ इन तीनों गांवों को घेर लिया था। इसके जवाब में यहां के लोगों ने पड़ोस के गांवों में अपने घुड़सवार भेज दिये परन्तु इससे पूर्व की इन तीनों गांवों में पड़ोस के गांव के लोग आ पाते राबर्टसन ने इन पर हमला कर दिया इसमें सात ग्रामीण मारे गये तथा 15-16 घायल हुए। कुछ अवरोधों के बाद वह इन गांवों को जलाने और लुटेरों को भी पकड़ने में सफल हो गया। वहां के पशुओं को भी जब्त करके ले गया। इन गांवों को जलाकर राबर्टसन अन्य गांवों के लिए भी एक उदाहरण स्थापित कर देना चाहता था।

20 जून को राबर्टसन ने नकुड की ओर प्रस्थान किया। उसके साथ तीस गोरखा, चालीस सिख सवार, सहायक मजिस्ट्रेट कॉलेज तथा कैनाल आफिसर विलकाक्स तथा हाइड भी थे। जब ये लोग नकुड पहुंचे तो इन्होंने देखा कि तहसील और थाने से आग की लपटें उठ रही हैं अब इन लोगों ने पडोस के गांवों की ओर कूच किया। सबसे पहले इन्होंने गूजरों के गांव फतेहपुर पर हमला किया। पूरे गांव को जला दिया गया और कुछ लोगों को गिरफ्तार करके ये लोग अपने कैम्प में ले आये। रात में पडोस के गांवों के लोगों ने इनके कैम्प को घेर लिया। ये लोग नगाडे बजाकर अंग्रेजों की चुनौती देते रहे। लगभग 250 गूजरों ने लैफ्टिनेंट बायसरजन पर हमला किया। जब 22 जून की प्रातः अंग्रेजों ने स्थिति का जायजा लिया तो उन्होंने देखा कि गूजरों ने उनको घेर लिया था। गूजरों ने नजदीक आकर इन लोगों पर गोलियां चलानी शुरु कर दी लेकिन आधुनिक हथियारों से लैस और पूर्ण प्रशिक्षित इन सैनिक अफसरों का वे अधिक देर तक मुकाबला नहीं कर पाये। पचास-साठ वीर गूजरों ने यहां अपने सम्मान के लिए जान दे दी बाद में अंग्रेजों ने यहां के चार गांवों में आग लगा दी। घाटमपुर और अम्बेहटा के निकटवर्ती कुछ अन्य गांव इन उपद्रवों में प्रमुख थे और बख्शी और फतुआ के नेतृत्व में गूजर इन्हें (अंग्रेजों को) कुछ समय तक लगातार परेशानियां देते रहे।

22 जून को लैफ्टीनेंट बायसरजन ने सहारनपुर नगर के निकट के क्षेत्रों से क्रान्तिकारियों को बहुत क्षति पहुंचाते हुए उन्हें पीछे धकेल दिया। साढ़ौली गांव के मुखिया फतुआ को उसके बीच अनुयायियों सहित इस मुठभेड में पकड़ लिया। राबर्टसन ने लिखा है कि- "22 जून (1857) की

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

शाम को मैंने बायसरजन द्वारा बन्दी बनाये गये साढ़ौली के जमींदारों में से एक को तहसील के दरवाजे की मेहराब पर लटका कर फांसी दे दी।'' फांसी पाने वाले साढ़ौली के मुखिया फतुआ थे जिनका पार्थिव शरीर चार-पांच दिन तक तहसील के द्वार पर लटका रहा था। अंग्रेजों के खौफ से किसी की भी हिम्मत फतुआ के मृत शरीर को उतारने की नहीं हुई थी। उन बीस क्रान्तिकारियों को जो मुखिया फतुआ के साथ बन्दी बनाये गये थे, काला पानी का दण्ड दिया गया था।

निष्कर्ष

जनपद सहारनपुर के सन्दर्भ में देख जाये तो शोधपूर्ण अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि 1857 के स्वातन्त्रय आन्दोलन में जो जाति संगठित रूप से अंग्रेजों के विरुद्ध उठ खड़ी हुई थी वह गुर्जर जाति थी। मेरठ में क्रान्ति की शुरुआत सिपाहियों से हुई जबकि जनपद सहारनपुर में सर्वप्रथम गूजरों ने अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठाये थे, जो जनक्रान्ति का सूचक है। विद्रोह के आरम्भ में ही देखा गया कि गूजरों के गांवों का साहस इस सीमा तक बढ़ गया था कि उनको नियन्त्रित करना अंग्रेजों के लिए कठिन हो गया था। वास्तव में गूजर 1857 की क्रान्ति के अग्रदूत बन गये थे। इन्होंने मालगुजारी देना ही बन्द नहीं किया था, अपितु सरकारी खजानों पर आक्रमण करना तथा उन्हें लूटना भी प्रारम्भ कर दिया था। जनपद के एक बड़े भू-भाग पर से इन्होंने कुछ समय के लिए फिरंगियों के अधिकार को समाप्त कर दिया था।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. *कौशिक श्याम लाल, जिला सहारनपुर में स्वतन्त्रय संग्राम*
2. *रिजवी, एस.ए.ए., फ्रीडम स्ट्रगल इन यू.पी. वाल्यूम-प् पब्लिकेशन ब्यूरो इन्फार्मेशन डिपार्टमेन्ट, यू.पी.*
3. *मजूमदार, आर.सी., दि सिपाय एण्ड म्यूटिनी रिवोल्ट आफ 1857, कलकत्ता 1957*
4. *पाण्डेय, धनपति, आधुनिक भारत का इतिहास, द्वितीय खण्ड मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 4 अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली*
5. *सावरकर, वी.डी., 1857 का भारतीय स्वतन्त्रता समर*
6. *महाजन, वी.डी., आधुनिक भारत का इतिहास, एस. चन्द्र एण्ड कम्पनी लि., रामनगर, नई दिल्ली, ग्यारहवा संस्करण, 1990*
7. *सिंह, गणपति (प्रि.), 1857 के गूजर शहीद 1984 नवादा कोह पाली फरीदाबाद*
8. *पंवार, सिंह कुंवरपाल, क्रान्ति के अन्कुर- गर्वीले गुर्जर मानस संगम महाराज प्रयाग नारायण मन्दिर (शिवाला), कानपुर, 1994*
9. *जैन, प्रसाद राजेन्द्र, 0857 का विप्लव और शाह जफर गोपाल प्रकाशन, मेरठ 1957*
10. *शर्मा, के.के., सहारनपुर सन्दर्भ, सन्दर्भ प्रकाशन, सहारनपुर, 1886*
11. *राय, लाला लाजपत, अनहैप्पी इण्डिया, बन्ना पब्लिशिंग कम्पनी, कलकत्ता*
12. *खान, अहमद सर सैय्यद, दि काॅलेज आॅफ दि इण्डियन रिवोल्ट, बनारस, 1873*
13. *श्रीवास्तव, एम0पी0, दि इण्डियन म्यूटिनी, इलाहाबाद, 1979*
14. *सिंह, मुरली मनोहर प्रसाद, चंचल चौहान, 1857 इतिहास कला साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, इलाहाबाद, पटना, प्रथम संस्करण, 2007*
15. *गौतम, पी.एल., आधुनिक भारत का इतिहास, प्रकाशन जयपुर, प्रथम संस्करण, 2004*
16. *वर्मा, वंदावनलाल, झांसी की रानी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003*
17. *ताराचन्द, भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, प्रकाशन सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार चौथा संस्करण, 2007*
18. *शर्मा, मालती, आधुनिक भारत का इतिहास, प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2011*
19. *चतुर्वेदी, महाश्वेता, आधुनिक भारत का इतिहास, प्रकाशन जयपुर, प्रथम संस्करण, 2010*